रमज़ान का संदेश

पांच शीर्षकों पर आधारित

1. रमज़ान की दस नितियां
2. रमज़ान की तीस विशेषताएं
3. रमज़ाम में प्रचुरता से क़ुर्आन पढ़ने पर प्रोत्साहन
4. शब-ए-क़द्र की दस विशेषताएं
5. ईदुल फित्र का उपदेश-ईदुल फित्र से संबंधित दस महत्वपूर्ण बिन्दुएं

लेखक:

शैख़ माजिद बिन सुलैमान अर्रसी

मोहर्रम - 1444 हिजरी

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد:

रमज़ान से संबंधित पाच निबंधों पर सम्मिलित यह एक संक्षिप्तं संग्रह हैएये निबंधें वास्ताव में उपदेशों का समाविष्ट हैंएजिन्हेंज मैंने इस उद्देश्यव से पुस्तजक के रूप में एकत्र किया है कि अ़सर की नमाज़ के पश्चात नमाज़ी जनों के समक्ष इन निबंधों को पढ़ना आसान हो सकेएअल्लाह तआ़ला इस पुस्तकक को इसके लेखकएपाठक एवं प्रकाशक के लिए लाभदायक बनाएएऔर अपार दरूर व सलाम एवं बरकतें नाज़िल फरमाए हमारे नबी मोह़म्मादएआपके परिवार व संतान एवं सह़ाबा जनों पर।

लेखक:

माजिद बिन सुलैमान अर्रसी

3 सफर 1444 हिजरी

रमज़ान की दस नितियां

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

प्रषंसाओं के पष्चात!

सर्वश्रेश्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है।दुश्टतम चीज़ धर्म में अविश्कारित बिदअ़त;नवाचारद्धहै और प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

• अल्लाह तआ़ला ने अपनी ह़िकमत; नीतिद्ध से बंदों के लिए रमज़ान को मषरू ; अनिवार्यद्ध किया है,जिसमें फजर के समय से लेकर सूर्य अस्त होने तक मनुश्य भोजन.जल और संभोग से रुका रहता है।

1.अल्लाह तआ़ला ने बड़े दूरदृश्टिता से रोज़े को फरज़ किया;[1]द्धउनमें सबसे बड़ी हिकमत; नीतिद्ध तक़वा ;धर्मनिश्ठाद्ध की प्राप्ति है:

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمْ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ **تَتَّقُون**﴾.

अर्थातःऐ ईमान वालो!तुम पर रोज़े रखना फरज़; अनिवार्य द्धकिया गया है,जिस प्रकार तुमसे पूर्व के लोगों पर फरज़; अनिवार्यद्ध किये गऐ थें,ताकि तुम तक़वा;इ़ष्वर भक्तिद्ध अपनाओ।

आयत से ज्ञात हुआ कि रोज़े के अनिवार्य होने की हिकमत़;नीतिद्धयह है कि तक़वा;धर्मनिश्ठाद्ध अपनाया जाऐ,तक़वा;पुण्यषीलताद्ध यह है कि बंदा अपने और अल्लाह की यातना के मध्य बचाव की दीवार बनाए,वह इस प्रकार कि अल्लाह के आदेषों को पूरा करे और अल्लाह ने जिन

[1] यह अध्याय अलइस्लाम,सवाल व जवाब वेबसाइट और षैख मोह़म्मद बिन सालेह बिन ओसैमीन रहिमहुल्लाह की पुस्तक''मजालिसो षहरे रमज़ान''के बाबुल मज्लिस अलतासे से संक्षेप एवं हेरफेर के साथ लिया गया है।

चीजों से रोका है उससे रुक जाए। **जिसके नरिणामस्वरूप वह अपने आत्मा को स्वैद अल्लाह तआ़ाला को याद रखने का आदी बन जाता है,अत: उपवास रखने वाला शक्ति के बावजूद इत्मइच्छा को छोड़देता है,केवल इस ज्ञान के आधार पर कि अल्लाह तआ़ाला उसे देख रहा है।**

2.रोजा़ की एक हिकमत;नीति यह है कि वह नेमतों ;आषार्वदों के आभारी होने का माध्यम है,क्योंकि रोजा़ नाम है खान,पीने और संभोग से अपने आपको बचाने का,जो कि बहुत बड़ी नेमत;इष्वरकृपाद्ध है,किंतू रोज़े की स्थिति में इनसे रुके रहने से मनुश्य को उनकी महत्ता का एहसास होता है,जब मनुश्य इन नेमतों;प्रदानोंद्ध से वंचित होता है तो उनका महत्व समझ में आता है,इस प्रकार रोज़े की स्थिति में इनसे दूर रहना उन नेमतों;आषीर्वादों द्धपर अल्लाह का आभार **वयक्त** करने पर उकसाता है।

3.रोज़े की एक हिकमत;नीति यह है कि वह अल्लाह की ह़राम;निशिद्ध की हुई चीजों को छोड़ने का माध्यम है,क्योंकि रोजा़ व्यक्तिगत इच्छाओं को मात देने और एकता की कठोरता और अहंकार से नफस;आत्माद्ध को दूर रखने का कारण है,जिससे मनुश्य के अंदर सत्य को स्वोकारने और लोगों के साथ विनीत भाव सेसुंदर व्यवहार करने का गुण जन्म लेता है,जब्कि हमेषा पेट भरा रखने और महिलाऔं से संभोग करने से अहंकार और नेमत;प्रदानद्ध की नाषुकरी का तत्व जन्म लेता है।

4.रोज़ा की एक हिकमत;नीति यह भी है कि वह काम.वासना पर प्रभुत्व प्राप्त करने में सहायता करता है,क्योंकि नफस;आत्माद्धजब पेट भरे स्थिति में हो तो उसमें काम.वासना **उत्पन्न** होता है,और जब वह भूका हो तो काम.वासना से दूर रहता है,इसी लिऐ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

ने फरमायाःष्ऐ युवाओं का समूह! तुम में से जो भी विवाह की **शक्ति** रखता हो तो उसे निकाह करलेना चाहिऐ और जो निकाह की **शक्ति** न रखता हो वह रोज़े रखले क्योंकि इनसे नफसानी;आंतरिकद्ध इच्छाऐं टूट जाती हैं[2]

5.रोज़े की एक हिकमत;नीति द्धयह भी है कि वह मिसकीनों/गरीबों के लिऐ अनूराग एवं कृपा का स्त्रोत है,क्योंकि रोज़ा रखने वाला जब कुछ समय के लिऐ भूख का कश्ट महसूस करता है तो उसके अंदर उन फकीरों और गरीबों की याद ताजा हो जाती है जो हर समय भूखे प्यासे होते हैं,जिसके **फलस्वरूप** उसक अंदर फकीर व गरीब के प्रति कृपा व नर्मी पैदा होती है,उसके साथ सुदर व्यवहार करने और उनको दान करने का भाव जन्म लेता है,इस प्रकार रोज़ा गरीबों के लिऐ अनूराग व कृपा और समाज में आपसी प्रेम को बढ़ावा देने का माध्यम बन जाता है।

6.रोज़े की एक हिकमत ;नीतिद्ध यह है कि उससे षैतान पराजित व निर्बल होता है,मनुश्य के प्रति उसका वसवसा निर्बल होजाता है,इस प्रकार मनुश्य बुरे कार्यों को करना कम करदेता है,क्योंकि षैतान मनु के संतानों की रगों में **रक्त** के जैसा दौड़ता है,जैसा कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसकी सूचना दी है[3] रोज़े से षैतान का मार्ग तंग होजाता है जिससे वह निर्बल होजाता है और उसका प्रभुत्व कम होजाता है,अतः **हृदय** में अच्छाई व पुण्य के कार्य करने और पापों से दूर रहने का तत्व उमंडने लगता है।

7–रोज़े की एकहिकमत ;नीतिद्ध यह है कि वह मोमिन;विष्वासीद्ध को अधिक से अधिक आज्ञा के कार्यों की आदत डाल देता है,इसलिऐ कि अधिकतर रोज़े की स्थिति में मनुश्य अधिक से अधिक आज्ञा के कार्य

[2] इसे बोखारीः5065 ने **इब्नेमसऊद** रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

[3] इसे बोखारीः2039 और मुस्लिमः2175 ने सफिया रजीअल्लाहुअंहा से वर्णित किया है।

करता है,जैसे अल्लाह का ज़िक्र और कुरान की तेलावत,इसके **फलस्वरूप** वह अन्य दिनों में भी इन इबादतों; पाथनाओं द्धको करने का आदी हो जाता है।

8.रोज़े की एक हिकमत;नीतिद्ध यह भी है कि इसके माध्यम से दुनिया और उसकी इच्छाओं से रूची समाप्त हो जाती है और अल्लाह तआ़ाला के पास जो पुण्य का परिणाम है उसके प्रति रूची **उत्पन्न** होता है।

9.रोज़ा की एक नीति यह भी है कि इसके माध्यम से समस्त संसार में अल्लाह की पूजा का प्रदर्षन होता है,आप देखते हैं कि समस्त संसार के समस्त मुसलमान इस महीने में **सामूहिक रूप से** रोज़े रखते हैं,यहां तक कि वे लोग भी रोज़े रखते है जो समान्य दिनों में इस्लाम विरोधी कार्य करते हैं,जब रमज़ान आता है तो वे भी अपने मुसलमान भाइयों के साथ रोज़े रखते कोई उनमें बेरोज़ा नहीं रहता,यहां तक कि बेराज़ा पापी.अल्लाह की पनाह.भी खुलेआम खाने पीने की हिम्मत नहीं करता,बल्कि काफिर भी मुसलमानों क सामने खाने पीने से बचता ह,निसंदेह यह एक महत्वपुर्ण प्राथना बल्कि इस्लाम के एक स्तंभ का व्यावहारिक प्रदर्षन है।

10.रोज़ा की एक हिकमत;नीतिद्ध यह भी है कि इसके माध्यम से मानवीय षरीर को अनेक चिकित्सा लाभ प्राप्त होते हैं,रोजा़ **ह्रदय** के धड़कन को सही करता है,पाचन तंत्र को राहत का अव्सर देता है,**रक्त** को हानीकारक चरबी,कोलसर्टोल और **खट्टे** डकार से साफ करता है,पेट को आराम पहुंचाता है,मनुश्य को मोटापे से बचाता है,षरीर में जो जहरीली सामग्री जमा हो जाते हैं,उनको बाहर करने में सहायता करता है,रक्तचाप और षुगर;नहंतद्धका संतुलन बनाऐ रखता है।

• यह वे दस हिकमतें;नीतियांद्ध हैं जो रोज़े के फरज;अनीवार्यद्ध होने में छूपी हूई है।

• अल्लाह तआ़ाला से प्रार्थना है कि हमें रमज़ान के रोज़े उसी प्रकार रखने की तौफीक दे जिस प्रकार उसे पसंद है,अपने ज़िक्र और आभार और सुंदर प्रार्थना पर हमारी सहायता फरमाए।

रमज़ानकेमहीनेकी२०विशेषताएँ!

अल्लाहतआलाजोचाहताहैअपनीइच्छासेअविष्कारकरताहैजैसाउस उच्चएवंसर्वश्रेष्ठकीबुद्धिमत्ताकोआवश्यकताहोतीहै.

इसीकारणवशउसनेकुछदेवदूतोंकोकुछदेवदूतोंपरवरियतादी,

कुछपुस्तकोंकोकुछपुस्तकोंपरअग्रमानतादी,

कुछदूतोंकोकुछदूतोंपरप्रधानतादी,

कुछस्थानोंकोदूसरेस्थानोंएवंसमयपरवरीयतादी,

इसीप्रकाररमज़ानकेमहीनेकोभीअन्यमहीनोंपरअग्रमान्यतादी.

यहदासोंकेहितमेंअल्लाहकीकृपाहैकिउसनेउनकेलिएपुण्यएवंलाभ केअवसरप्रदानकिएजिनमेंसत्यकर्मोंकेलाभकईगुनाबढ़ादिएजातेहैं, पापोंकोमिटादियाजाताहैएवंस्वर्गमेंस्थानउच्चकिएजातेहैं.

जान लें कि अल्लाह तआ़ला अपनी निती से जो चाहाता है पैदा करता है और जिसे चाहता है उसका चयन करता है,अत: कुछ फरिश्तों को कुछ पर फज़ीलत (प्रधानता) दी है,कुछ पुस्तकों को कुछ पर विशिष्टता प्रदान की है,कुछ पैगंबरों को कुछ पर वरिष्ठता प्रदान किया है,कुछ समयों एवं स्थानों को कुछ पर वरिष्ठता प्रदान की है,इसका एक उदाहरण यह है कि अल्लाह ने रमज़ान के महीने को अन्य समस्त महीनों पर

प्रधानता दी है,यह बंदों पर अल्लाह के विशेष रहमत (कृपा) का दृश्य है कि उसने उनके लिए पुण्य एवं भलाई के अवसर प्रदान किये,जिनमें पुण्यों का बदला बढ़ जाता है,पाप मिटाए जाते हैं और स्वर्ग में मोमिनों के स्थान उच्च किये जाते हैं।

• जबयहसिद्धहोगयातबयहभीज्ञातरखें - अल्लाहआपपरअपनीकृपाकीबरखाबरसाए- किरमज़ानकेव्रतकी तीस विशेषताएंहैं,उन में से कुछ विशेषताएं निम्नलिखितहैं:

1- व्रतइस्लामकाचौथास्तंभहै, अब्दुल्लाहबिनाउमररज़िअल्लाहूअन्हूमाकावर्णनहै: मैंनेरसूलसल्लल्लाहुअलैहिवसल्लमकोकहतेहुएसुना: इस्लामपंचस्तंभोंपरआधारितहै, यहकिअल्लाहकेअतिरिक्तकोईवास्तविकपूज्यनहीं, एवंनमाज़पढ़ना,दान-पुण्यदेना,हज्जकरना एवं रमज़ानकेव्रतरखना.[4]

[4]इसेबज़ार: ०८एवंमुस्लिम:१६नेप्रतिलिपिकीएवंउल्लेखकिएगएशब्दमुस्लिमकेहैं

2-

व्रतकीएकविशेषतायहभीहैकियहइस्लामसेपूर्वधर्मोंमेंभीप्रचलित थाजोइसकेसरफेसहोनेकाप्रमाणहैअल्लाहकाकथनहै:

يَـٰٓأَيُّهَاٱلَّذِينَءَامَنُواْكُتِبَعَلَيۡكُمُٱلصِّيَامُكَمَاكُتِبَعَلَىٱلَّذِينَمِنقَبۡلِكُمۡلَعَلَّكُمۡتَتَّقُونَ. (البقرة:183)

अर्थात: " एविश्वासयो! तुमपरव्रतरखनाअनिवार्यकियागयाजिसप्रकारतुमसेभूतपूर्वमनुष्यों परअनिवार्यकियागयाथा, ताकितुमभयकोअपनाओ."

3- व्रतकीएकविशेषतायहभीहैकिअल्लाहनेइसकासंबंधअपनीओर कियाहैजोकिसंपूर्णउपासनाओंमेंइसकीअलगपहचानएवंसर्वश्रेष्ठहो नेकोप्रमाणितकरताहै.

अबूहुरैरारज़िअल्लाहूअन्हूरिवायतकरतेहैंकिनबीसल्लल्लाहूअलैहि वसल्लमकाकथनहै:

"आदमकीसंतानकाव्रतकेअतिरिक्तप्रत्येककार्यउसकाहैयहमेराहैए वंमैंस्वयंउसकाबदलादूंगा..."

अल्लाहकेदासो!अल्लाहतआलाकासंपूर्णइबादतोंकेअतिरिक्तव्रतको विशेषरूपसेअपनीऔरसंबंधितकरनाइसबातपरसाक्ष्यहैकिअल्लाह तआलाकेनिकटयहमाननीयएवंप्रियउपासनाहै.

इसकाकारणयहहैकिइसइबादतकेभीतरअल्लाहकेहितमेंदांसोंकाभावखुलेरूपमेंशुद्धहुआकरताहैक्योंकिव्रतदांसोंएवंपालनहारकेबीचएकगुप्तवस्तुहैजिससेअल्लाहकेअतिरिक्तकोईभीअवगतनहींहोसकता.

व्रतरखनेवालाएकांतमेंउनवस्तुओंकेप्रयोगकरनेकीक्षमतारखताहैजिन्हेंअल्लाहतआलानेअवैधकरदियाहै,

परंतुवहउसकाप्रयोगनहींकरताहैक्योंकिउसेज्ञातहैकिउसकाएकरबहैजोअकेलेमेंभीउसेदेखरहाहैऔरउसनेउनवस्तुओंकोउसपरअवैधकरदियाहै,

इसलिएवहअल्लाहकीयातनासेभयकरतेहुएउनवस्तुओंकोत्यागदेताहै.

यहीवहमूलकारणहैकिअल्लाहनेअपनेदासोंकेइसशुद्धताकीप्रशंसाकीहैऔरसंपूर्णउपासनाओंकोछोड़करव्रतकोविशेषरूपसेअपनेलिएचुनलियाहै.

4-

रमज़ानकेव्रतकीएकविशेषतायहभीहैकिअल्लाहतालानेइसकेसंबंधमेंकहाहै: "मैंस्वयंइसकापरीणामदूंगा."

इसकारणवशअपनीओरबदलेकोसंबंधितकियाहैक्योंकिपूण्य-

कार्योंबदलागणनाकेसाथबढ़ा-चढ़ाकरप्रदानकियाजाताहै.

प्रत्येकपुण्यकालाभ१०गुनासेलेकर७००गुनाएवंउससेअधिकदियाजाताहै.

परंतुव्रतकेसवाबकोअल्लाहतआलानेबिनाकिसीगणनाकेअपनीऔरसंबंधितकियाहैजोइसबातकासाक्ष्यहैकिइसकासवाबअधिकबड़ाहै.

वहस्वच्छएवंविशालअल्लाहसंपूर्णदयालुसेबड़ादयालुएवंसारेकृपालुओंसेबड़ाकृपालुहै.

दयादयालुकेस्तरकेअनुसारमिलतीहैइसकारणवशव्रतरखनेवालेकासवाबअताहएवंअनगिनतहै.

5- व्रतकीएकविशेषतायहहैइसमेंधीरजकेतीनोंभागइकट्ठाहोजातेहैं: अल्लाहकीआज्ञाकारीतापरधीरज, अल्लाहनेजिनचीज़ोंकोअवैधकरदियाहैउनसेदूरीबनाएरखनेपरधीरज,

एवंअल्लाहनेहमारेभाग्यमेंजोकठिनपरिस्थितियांलिखदिएहैंउनपरधीरज.

जैसेभूखप्यासगंभीरतातनएवंप्राणकीदुर्बलताइसप्रकारव्रतरखनेवालोंकीगणनाउनकृपाणोंमेंहोताहैजिनकेसंबंधमेंअल्लाहकाकथनहै:

إِنَّمَايُوَفَّىٱلصَّـٰبِرُونَأَجْرَهُمبِغَيْرِحِسَابٍ . (الزمر:10)[5]

अर्थात: "कृपाणोंकोपूर्णरूपसेअनगिनतसवाबदियाजाएगा."

6-

व्रतकीएकविशेषतायहभीहैकिअल्लाहतआलानेउपवासकरनेवालों केलिएस्वर्गमेंएकऐसाद्वारतैयारकररखाहैजिससेउनकेअतिरिक्त कोईऔरप्रवेशनहींकरेगा, सहलबिनसअ़दरज़िअल्लाहूअन्हूरिवायतकरतेहैंकिरसूलसल्लल्लाहुअलैहिवसल्लमकाकथनहै:

"**स्वर्गकाएकद्वारहैजिसेरैय्यानकहतेहैं, प्रलयकेदिनइसद्वारसेकेवलउपवासकरनेवालेहीप्रवेशकरेंगे,उनके अतिरिक्तऔरकोईउससेप्रवेशनहींकरेगा. पुकाराजाएगाकिउपवासकरनेवालेकहांहैं? वेखड़ेहोजाएंगेउनकेअतिरिक्तऔरकोईनहींभीतरप्रवेशकरपाएगाऔ**

[5] **शैख़मोहम्मदबिनसालेहअल-उसैमीनरहिमहुल्लाहखेलएकमजालिसु-शहरी-रमज़ाननामकपुस्तककेनौवेंअध्यायसेसंक्षेपएवंरद्द-व-बदलकेसाथस्थानांतरितहै.**

रजबयहलोगभीतरप्रवेशकरजाएंगेतोयहद्वारबंदकरदियाजाएगाफिरउससेकोईअंदरप्रवेशनहींकरसकेगा."[6]

7-व्रतकीएकविशेषतायहभीहैकिवहनरकसेसुरक्षादेनेवालाढालहै,

उस्मानबिनअबुलआसरज़िअल्लाहूअन्हूरिवायतकरतेहैंकिमैंनेरसूलसल्लल्लाहुअलैहिवसल्लमकोफ़रमातेहुएसुना:
"उपवासनरकसेसुरक्षादेनेवालीढालहै,
जिसप्रकारतुममेंसेकोईयुद्धकेमैदानमेंढालसेअपनीसुरक्षाकरताहै."
[7]

8- व्रत की एक विशेषता यह भी है कि जो व्यक्ति ईमान एवं इहतिसाब के साथ रमज़ान के महीने के रोज़े रखता है उसके पूर्व के सारे पापक्षमाहोतेहैं,अबूहोरैरह रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:जो व्यक्ति ईमान रखते हुए पुण्य की नीयत से

[6]इसेबुख़ारी:१८९६एवंमुस्लिम:११५२नेरिवायतकियाहैएवंउल्लेखकिएगएशब्दबुख़ारीकेहैं.

[7] इसेइमामअहमद: ४/२२नेरेवायादकियाहैएवंअलमुसनदकेशोधकर्ताओंनेकहाहैकिइसकीसनदमुस्लिमकेशर्तपरसहीहै.

<u>रमज़ान के रोज़े रखे उसके समस्त पिछले पाप क्षमा हो जाते हैं।</u>[8]

अबूहोरैरह रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम मिंबर पर चढ़े और फरमाया:आमीन,आमीन,आमीन।

आप से पूछा गया कि:हे अल्लाह के रसूल!आप मिंबर पर चढ़े तो आप ने तीन बार (आमीन) कहा।

आप ने फरमाया:जिब्रील अलैहिस्सलाम मेरे पास आए और फरमाया: (जिस व्यक्ति को रमज़ान का महीना मिला और उस को क्षमा न मिल सका,वह नरक में प्रवेश करेऔर अल्लाह उसे (अपने कृपा से) दूर करदे,आप आमीन कहिये,तो मैं ने कहा:आमीन।[9]

अबूहोरैरह रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाया करते थे:पांच समय की नमाज़ें,एक

---

[8] **इसे बोख़ारी (38) और मुस्लिम (760) ने रिवायत किया है।**

[9] **इस ह़दीस को अह़मद (2/246-254) इब्ने ख़ोज़ैमा (3/192) ने वर्णित किया है,इस का मूल्य मुस्लिम में (2551) में है,अल्बानी ने** صحيح الترغيب والترهيب **(997) में कहा है कि:यह ह़दीस ह़सन सह़ीह है।**

जुमा से दूसरा जूमा और एक रमज़ान से दूसरा रमज़ान,उनके मध्य होने वाले पापों के लिए कफ्फारा (प्रायश्चित) हैं,शर्त यह है कि बड़े पापों से बचा जाए।[10]

9-रमज़ानकेमहीनोंकेव्रतकीएकविशेषतायहहैकिमुसलमानोंपरयह उपवाससरलकरदिएगएहैं,

वहइसप्रकारकीउपवासकरनेवालाजबइससेअवगतहोजाताहैकिआसपासकेसंपूर्णमनुष्यउपवासकिएहुएहैंतोयहलगताहैकिउसकेलिएव्रतरखनाआसानहैऔरउसकेभीतरउपासनाकीसंदर्भमेंचपलताउत्पन्नहोतीहै.

10-व्रतकीएकविशेषतायहभीहैकिअल्लाहतआलानेउपवासकरनेकोप्रार्थनाकेस्वीकारकरनेकाएकविशेषकारणघोषितकियाहै, इसकासाक्ष्यनबीसल्लल्लाहूअलैहिवसल्लमकायहकथनहै: " तीनप्रकारकीप्रार्थनाएंआवश्यकरूपसेस्वीकारकीजातीहैं: पिताकीप्रार्थना, उपवासकरनेवालोंकीप्रार्थना, यात्रीकीप्रार्थना."[11]

---

[10] सहीह मुस्लिम:233

[11] इसेबैहक़ी: ३/३५४नेअनसबिनमालिकसेरिवायतकियाहै,एवंअल-बानीनेअल-सहीहा:१७९७मेंइसकाउल्लेखकियाहै.

इसकेअतिरिक्तअल्लाहकेरसूलसल्लल्लाहुअलैहिवसल्लमकाकथ
नहै: "
अल्लाहतालातीनप्रकारकेमनुष्यकीप्रार्थनावापसनहींलौटाता:
न्यायकरनेवालेशासक,
उपवासकरनेवालेयहांतककीवहउपवासतोड़लें,
एवंउत्पीड़ितव्यक्ति."[12]

11-रमजानकेमहीनेकीएकविशेषतायहभीहैकिजोव्यक्तिईमानके
साथसवाबकीआशाकरतेहुएरमज़ानकेमहीनेमेंरात्रिमेंजागकरउपास
ना (तरावीहकीनमाज़) करताहैउसकेपीछलेपापक्षमाकरदिएजातेहैं.
अबूहुरैरारज़िअल्लाहूअन्हूसेमरवीहैकिआपसल्लल्लाहूअलैहिवसल्
लमकाकथनहै: "
जिसनेईमानकेसाथसवाबकीआशाकरतेहुएरमज़ानकेमहीनेमेंकया
मुल-लेलकी, अर्थाततरावीहकीनमाज़पढ़ी;
उसकेपिछलेपापक्षमाकरदिएजातेहैं."[13]

---

[12] इसेअहमद:९७४३आदिनेरिवायतकियाहैएवंअल-मुसनदकेशोधकर्ताओंनेकहाहैकियहहदीसअधिकतममार्गएवंगवाहोंकेआधारपरसहीहहै.

[13] इसेबुख़ारी: ३७एवंमुस्लिम: ७६०नेरिवायतकियाहै.

इसकेअतिरिक्तआपसल्लल्लाहूअलैहिवसल्लमकाकथनहै: "जोव्यक्तिईमानकेसाथक़्यामकरेयहांतककिवहसमापनकरलेतोअल्लाहतआलाउसव्यक्तिकेलिएपूरीरात्रिक़्यामकरनेकासवाबसुनिश्चितकरेगा."[14]

12-

रमज़ानकीएकविशेषतायहभीहैकिजोव्यक्तिईमानकेसाथसवाबकीआशाकरतेहुएरमज़ानकाव्रतरखताहैउसकेपिछलेसंपूर्णपापक्षमाकरदिएजातेहैं,

अबूहुरैरारज़िअल्लाहूअन्हूसेमरवीहैकिरसूलसल्लल्लाहुअलैहिवसल्लमनेफ़रमाया:

"जोरमज़ानकेव्रतईमानकीसाथसवाबकीआशाकरतेहुएरखेउसकेपिछलेसंपूर्णपापक्षमाकरदिएजाएंगे."[15]

अबूहुरैरारज़िअल्लाहूअन्हूसेमरवीहैकिनबीसल्लल्लाहुअलैहिवसल्लममंचपरपधारेऔरतीनबारआमीनकहा!

---

[14] इसेअबूदाऊदआदिनेअबूज़ररज़िअल्लाहूअन्हूसेरिवायतकियाहैएवंशैख़शुऐबरहिमहुल्लाहनेइसेसहीहकहाहै

[15] इसेबुख़ारी: ६८एवंमुस्लिम: ७६०नेरिवायतकियाहै.

आपसेप्रश्नकियागयातोआपनेफ़रमाया: "
जिब्रीलअलैहिस्सलाममेरेपासआए, औरफ़रमाया:
जिसनेरमज़ानकेमहीनेकोपायाएवंउसकीक्षमानहींहोसकीऔरवहन
रकमेंप्रवेशकरगयाअल्लाहउसेअपनीदयासेवंचितकरदे! -
आपआमीनकहिए- तोमैंनेआमीनकहा."[16]

अबुहुरैरारज़िअल्लाहूअन्हूफ़रमातेहैं:
रसूलसल्लल्लाहुअलैहिवसल्लमफ़रमायाकरतेथे: "
जबमनुष्यबड़ेपापोंसेवंचितरहाहो०५नमाज़ें,
एकजुमाद्वितीयजुमातक,
एकरमज़ानद्वितीयरमज़ानतकबीचकेसमयमेंहोनेवालेपापोंकोमि
टानेकाकारणहै."[17]

13-रमज़ानकीएकविशेषतायहभीहैकिइसमहीनेमेंदान-
पुण्यकरनामुस्तहबहै,इब्नेअब्बासरज़िअल्लाहूअन्हूमासेमरवीहैकि

[16] इसेअहमद: २/२४६-२५४, एवंइब्न-ए-ख़ुज़ैमा: ३/१२९नेरिवायतकियाहै, इसकामूलसहीहमुस्लिम, हदीससंख्या: २५५१केअंतर्गतआईहै, अल-बानीनेसहीह-उत्तरग़ीबिवत्तरहीब:९७७मेंकहांहैकियहहदीसहसनसहीहहै.

[17] इसेमुस्लिम: २३३नेरिवायतकियाहै.

"नबीसल्लल्लाहूअलैहिवसल्लमभलाईकरनेमेंसर्वश्रेष्ठउदारथेऔर रमजानमेंआपकीउदारताकीतोकोईसीमाहीनहींथी."[18]

14-रमज़ानकीएकविशेषतायहभीहैकिइसकेउ़मरेकापुण्यकईगुना बढ़ादियाजाताहै.

इब्नेअब्बासरज़िअल्लाहूअन्हूमाफरमातेहैंकिरसूलसल्लल्लाहुअलैहिवसल्लमनेएकअंसारीमहिलासेकहा:

"जबरमज़ानआएतोउसमेंउमराकरलो, क्योंकि (रमज़ानकेमहीनेमेंएकउमराह़ज्जकेसमानहोताहै."[19]

15-

रमज़ानकेमहीनेकीएकविशेषतायहभीहैकिरमजानकीप्रत्येकरात्रि मेंअल्लाहतालाअपनेकुछदासोंकोनरकसेस्वतंत्रताकाप्रमाणदेताहै, अबूहुरैरारज़िअल्लाहूअन्हूफ़रमातेहैंकेरसूलसल्लल्लाहोअलेहीवसल्लमकाकथनहै: "

जबमैंरमज़ानकीप्रथमरात्रिआतीहैतोदुष्टदेवोंएवंविद्रोहजिनोंकोजकड़दियाजाताहै, नरककेद्वारबंदकरदिएजातेहैं,

[18] इसेबुख़ारी:०६एवंमुस्लिम:२३०८नेरिवायतकियाहै.

[19] इसेबुख़ारी: १७८२एवंमुस्लिम: १२५६नेरिवायतकियाहै.

उनमेंसेकोईभीद्वारखोलानहींजाता.

एवंस्वर्गकेद्वारखोलदिएजातेहैं,

उनमेंसेकोईभीद्वारबंदनहींकियाजाता. पुकारनेवालापुकारताहै: भलाईकेचाहनेवाले! आगेबढ़, एवंपापोंकेचाहनेवाले! रुकजा. औरअग्निसेअल्लाहकेबहुतसेस्वतंत्रकिएगएदासहैं.

(होसकताहैतूभीउन्हींमेंसेहो!)

औरऐसारमज़ानकीप्रत्येकरात्रिकोहोताहै."[20]

जाबिररज़िअल्लाहूअन्हूफ़रमातेहैंकिरसूलसल्लल्लाहुअलैहिवसल्लमनेफ़रमायाअल्लाहतआलाप्रत्येकउपवासकेतोड़तेसमयकुछलोगोंकोनरकसेस्वतंत्रकरताहै, औरयह (रमज़ानकी) प्रत्येकरात्रिकोहोताहै."[21]

16-17-

रमज़ानकीएकविशेषतायहभीहैकिइसमहीनेमेंस्वर्गकेद्वारखोल

[20] इसेतिर्मीज़ी:६८२, एवंइब्न-ए-माजा: १६४२नेरिवायतकियाहै, एवंशैख़अल-बानीरहिमहुल्लाहनेसहीह-हुल-जामे: ७५९मेंइसेहसनकहाहै.

[21] इसेअहमद:२२२०२, एवंइब्नेमाजा:१६४३नेरिवायतकियाहै, एवंउल्लेखकिएगएशब्दइब्न-ए-माजाकेहैं, इसकेअतिरिक्तशैख़अल-बानीनेसहीहइब्न-ए-माजामेंइसेसहीहकहाहै.

दिएजातेहैंनरककेद्वारबंदकरदिएजातेहैंएवंदुष्टदेवोंकोहथकड़ियोंसे जकड़दियाजाताहै.

अबूहुरैरारज़िअल्लाहूअन्होसेमरवीहैकिरसूलसल्लल्लाहूअलैहिवस ल्लमनेफ़रमाया:

"जबरमज़ानकेमहीनेकाआगमनहोताहैतोस्वर्गकेसंपूर्णद्वारखोलद िएजातेहैं,नरककेद्वारबंदकरदिएजातेहैंएवंदुष्टदेवोंकोज़ंजीरोंसेज कड़दियाजाताहै."[22]

18 -रमज़ान के महीने की एक विशेषता यह है कि इस में शैतानों को ज़ंजीरों में जकड़ दिया जाता है,इसका प्रमाण उपरोक्त दोनों ह़दीसें हैं,शैतानों को जकड़ने का मतलब यह है कि ज़ंजीर में उन्हें जकड़ देना,वह इस प्रकार से कि रमज़ान के अलावा दिनों में जिन स्थानों तक उनकी पहुंच थी,वहां तक रमज़ान में न जा सकें,बल्कि उनकी दुष्टता सीमित हो जाए,एक कथन यह भी है कि केवल दुष्ट शैतानों को ही जकड़ा जाता है।

[22] इसेबुख़ारी:१८९९, एवंमुस्लिम: १०७९नेरिवायतकियाहै.

19-

रमज़ानकेमहीनेकीएकविशेषतायहहैकिइसमेंप्रचुरताकेसाथक़ुरआन कासस्वरपाठकरनामुस्तहबहै, सलफ़-ए-सालेहीनरिज़वानुल्लाहअलैहिमअजमईनकीआदतथीकिवेनबीसल्लल्लाहूअलैहिवसल्लमकेमार्गकापालनकरतेहुएरमज़ानमेंपूराक़ुरआनकासस्वरपाठपूरीव्यवस्थाकेसाथकियाकरतेथे,

क्योंकिजिब्रीलअलैहिस्सलामप्रत्येकवर्षरमज़ानकेमहीनेमेंरसूलसल्लल्लाहुअलैहिवसल्लमकेसाथक़ुरआनसुनते-सुनातेथे.

20-

रमज़ानकीएकविशेषतायहभीहैकीउपवासप्रलयकेदिनदासोंकेहितमेंसंस्तुतिकरेगाकिउन्हेंउच्चस्थानप्रदानकिएजाएंएवंपापक्षमाकरदिएजाएं,

अब्दुल्लाहबिनअम्मरज़िअल्लाहूअन्हूमासेमरवीहैकिरसूलसल्लल्लाहुअलैहिवसल्लमनेफ़रमाया:

उपवासएवंक़ुरआनप्रलयकेदिनदासकेहितमेंसंस्तुतिकरेंगे,

उपवासकहेगा: (हेपालनहार! मैंनेइसेखानपानएवंहवससेदूररखा, मेरीसंस्तुतिइसकेहितमेंस्वीकारकरले.) क़ुरआनकहेगा: (हेपालनहार! मैंनेइसेरात्रिकेसमयविश्रामलेनेसेदूररखा,

मेरीसंस्तुतिइसकेहितमेंस्वीकारकरले.)

इसकारणदोनोंकीसंस्तुतिस्वीकारकरलीजाएगी.[23]

21-

रमज़ानकीएकविशेषतायहभीहैकिउपवासकरनेवालोंकेमूंहकीगंध अल्लाहकेनिकटकस्तूरीकेसुगंधसेभीअधिकप्रियहै,

अबूहुरैरारज़िअल्लाहूअन्हूसेमरवीहैकिरसूलसल्लल्लाहुअलैहिवसल्लमनेफ़रमाया:

उसज़ातकीक़समजिसकेहाथमेंमोहम्मदसल्लल्लाहुअलैहिवसल्लमकाप्राणहै,

उपवासकरनेवालोंकेमुंहकीगंधअल्लाहकेनिकटकस्तूरीकेसुगंधसेअधिकअच्छाहै.[24]

22-

उपवासकीएकविशेषतायहहैकिअल्लाहतआलाउपवासकरनेवालोंकोदोप्रसन्नताएंप्रदानकरताहै.

एकप्रसन्नताजबवहउपवासतोड़ताहैएवंदुसरीप्रसन्नताजबवहअपने

[23] इसेअहमद: २/१४७नेरिवायतकियाहै, एवंअल-बानीरहिमहुल्लाहनेसहीहु-त्तरग़ीबि: ९८४एवंसहीहुल-जामे: ७३२९मेंरिवायतकियाहै.

[24] बुख़ारी:१९०४, मुस्लिम: ११५१

रबसेभेंटकरेगा,

अबूहुरैरारज़िअल्लाहूअन्हूसेमरवीहैकिरसूलसल्लल्लाहुअलैहिवसल्लमनेफ़रमाया: उपवासकरनेवालोंकोदोप्रसन्नताएंप्राप्तहोंगी, (एकतो) जबवहउपवासतोड़ताहैतोप्रसन्नहोताहै, एवंदूसरीजबवहअपनेरबसेभेंटकरेगातोअपनेउपवासकासवाबप्राप्त करकेप्रसन्नहोगा.[25]

23-

रमज़ानकेमहीनेकीएकविशेषतायहभीहैकिइसीमेंक़ुरआनकाअवतारहुआ, अल्लाहकाकथनहै:

شَهۡرُ رَمَضَانَ ٱلَّذِيٓ أُنزِلَ فِيهِ ٱلۡقُرۡءَانُ. (البقرة:185)

अर्थात:

"रमज़ानकामहीनावहहैजिसमेंक़ुरआनकोअवतरितकियागया."

रमज़ानमेंभीशुभरात्रिमेंक़ुरआनअवतरितहुआ, अल्लाहकाकथनहै:

إِنَّآ أَنزَلۡنَٰهُ فِي لَيۡلَةِ ٱلۡقَدۡرِ. (القدر:01)

अर्थात: " हमनेइसेशुभरात्रिमेंअवतरितकिया."

[25] **बुख़ारी:१९०४, मुस्लिम: ११५१**

यह एक महत्वपूण रात है,इस में कुरान लौह़-ए-मह़फ़ूज़ से बैतुल इज़्ज़त की ओर उतारा गया जो आकाशीय संसार में है,इसके पश्चात परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के अनुसार थोड़ा-थोड़ा नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अवतरित होता रहा।

• इसेशुभरात्रिइसलिएकहाजाताहैकिवहबहुतहीसर्वश्रेष्ठस्थानवाली रात्रिहैजैसाकिकहाजाताहै: (अमुकव्यक्तिबड़ाउच्चस्थानवालाहै.) इसीप्रकारशुभकीओररात्रिकासंबंधकिसीवस्तुकोउसकीगुणवत्ताकी ओरसंबंधितकरनेजैसाहैइसलिएइसकाअर्थयहहोगाकिसर्वश्रेष्ठ, उच्चस्थानवालीरात्रि.

एककथनकेअनुसारइसेशिवकीरात्रिइसकारणवशकहाजाताहैकिइस मेंपूर्णवर्षकान्यायकियाजाताहै, जैसाकिअल्लाहकाकथनहै:

فِيهَايُفْرَقُكُلُّأَمْرٍحَكِيمٍ. (الدخان: 04)

अर्थात: "

इसीरात्रिमेंप्रत्येकशक्तिशालीकार्योंकान्यायकियाजाताहै."

इब्न-ए-क़ैय्यिमरहिमहुल्लाहकहतेहैं: " यहीकथनसत्यहै."[26] [27]

[26] **शिफ़ा-उल-अलील: १/१४०, प्रकाशित: मकतबतुल-बीकान, रियाज़**

[27] **इनकथाओंकेदेखनेहेतुदेखें: अहादीसुस्-सियाम:१४०, लेखकशैख़अब्दुल्लाहफ़ौज़ान.**

• **अल्लाहतआलानेशुभरात्रिकोलाभदायकरात्रिसेवर्णितकियाहै, जैसाकिअल्लाहतआलानेक़ुरआनकेअवतरितहोनेकेसंदर्भमेंकहा:**

إِنَّآأَنزَلۡنَٰهُفِيلَيۡلَةٖمُّبَٰرَكَةٍۚ. (الدخان:03)

अर्थात: "हमनेइसकोलाभदायकरात्रिमेंअवतरितकिया."

• **शुभरात्रिकीएकविशेषतायहहैकिइसमेंदेवदूतोंकाअवतारहोताहै, जैसाकिअल्लाहतआलाकाकथनहै:**

تَنَزَّلُٱلۡمَلَٰٓئِكَةُوَٱلرُّوحُفِيهَا. (القدر:04)

अर्थात: " इसमेंरूहुल-अमीनएवंदेवदूतअवतरितहोतेहैं."

इसश्लोकमेंअल-रूहकाअर्थजिब्रीलहै,इब्न-ए कसीर रहिमहुल्लाहइसश्लोककाउल्लेखकरतेहुएलिखतेहैं: अर्थात: इसरात्रिप्रचुरताकेसाथबरकतकाअवतारहोताहै, इसकारणवशदेवदूतभीभारीसंख्यामेंअवतरितहोतेहैं, बरकतएवंरहमतकेसाथदेवदूतोंकाभीअवतारहोताहै. इसकेअतिरिक्तयहदेवदूतक़ुरआनकेसस्वरपाठकरतेसमयभीअवतरितहोतेहैंएकदमिकपरिषदोंकोअपनेअंतर्गतलेलेतेहैं, सत्यताकेसाथशिक्षाप्राप्तकरनेवालेकेसम्मानमेंउनकेलिएअपनेपरों कोबिछादेतेहैं."

इब्न-ए-कसीररहिमहुल्लाहकाकथनसमाप्तहुआ.

24- रमज़ान की एक विशेषता यह है कि जो व्यक्ति शुभरात्रि में ईमान व इहतिसाब के बदले के साथ क़याम करे उसके पूर्व के समत्स पाप क्षमा कद दिये जाते हैं,अर्थात:जो व्यक्ति शुभरात्रि को प्रार्थना से बसाए रखे,अल्लाहनेइसरात्रिउपासनाकरनेवालोंकेलिएजोलाभएवंसवाबतै यारकररखाहै (उसपरविश्वासकरतेहुए) एवंलाभ-सवाबकीआशाकरतेहुए;
उसकेपूर्वमेंकिएगएसंपूर्णपापक्षमाकरदिएजातेहैं.
अबूहुरैरारज़िअल्लाहूअन्होसेमरभीहैकिनबीसल्लल्लाहुअलैहिवसल्लमकाकथनहै: " जोव्यक्तिरमज़ानकेव्रत; विश्वासएवंलाभ-सवाबकीआशाकरतेहुएरखेउसकेपूर्वमेंकिएगएसंपूर्णपापक्षमाहोजातेहैं.[28]

[28] इसेबुख़ारी:१९०१, एवंमुस्लिम:७५९नेरिवायतकियाहै.

25-<u>रमज़ान की एक विशेषता यह है कि शुभरात्रि में नमाज़ पढ़ते रहना हज़ार महीनों की प्रार्थना से अच्छा है</u>,अर्थात 83 वर्ष से भी अधिक,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

لَيۡلَةُ ٱلۡقَدۡرِ خَيۡر مِّنۡ أَلۡفِ شَهۡر . (القدر:03)

अर्थात: "शुभरात्रि१०००महीनोंसेअधिकअच्छीहै."

• इसकेअतिरिक्तआपसल्लल्लाहुअलैहिवसल्लमकाकथनहै:

रमज़ानकालाभदायकमहीनातुम्हारेनिकटआचुकाहै,

अल्लाहनेतुमपरइसकेव्रतअनिवार्यकरदिएहैं,

इसमेंआकाशकेद्वारखोलदिएजातेहैं,

नरककेद्वारबंदकरदिएजातेहैं,

विद्रोहीदुष्टदेवोंकोहथकड़ियांपहनादीजातीहैंएवंइसमेंअल्लाहतआलाकेलिएएकरात्रिऐसीहैजोहज़ारमहीनोंसेअधिकअच्छीहै.जोइसकेलाभसेवंचितरहावहबसवंचितहीरहा."[29]

• <u>इब्ने सादी रहिमहुल्लाह का कथन है:इस बात से हमारी बुद्धि आश्चर्यचकित हैं कि अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत को एक ऐसी रात प्रदान किया है जिस में किया जाने वाला अ़मल</u>

---

[29] **इसेनसई: १९०१नेअबूहुरैरारज़िअल्लाहूअन्हूसेरिवायतकियाहै,एवंअल-बानीरहिमहुल्लाहनेइसेसहीहकहाहै.**

हज़ार महिनों के अ़मल से भी बेहतर है जो कि एक बड़ी लंबी आयु पाने वाले व्यक्ति के जीवन के बराबर है अर्थात अस्सी वर्ष से भी अधिक।

थोड़े हेर-फेर के साथ आपका कथन समाप्त हुआ।

26-

रमज़ानकीएकविशेषतायहभीहैकिइसकेअंतिमचरणमेंएतेकाफ़कर ना

मुस्तहबहै,एतेकाफ़काअर्थहै:अल्लाहकीआज्ञाकारीताएवंउपासनाके हेतुमस्जिदसेचिपकजायाजाए.

आयशारज़िअल्लाहूअन्हारिवायतकरतीहैं:

"नबीसल्लल्लाहुअलैहिवसल्लमअपनीमृत्युतकलगाताररमज़ानके अंतिमचरणमेंएतेकाफ़करतेरहेएवंआपसल्लल्लाहुअलैहिवसल्लम केमृत्युकेपश्चातउनकीपवित्रपत्नियांएतेकाफ़करतीरहीं."[30]

एतेकाफ़करनेकाकारणयहथाकिआपशुभरात्रिकीखोजकरते,

अबूसईदखुदरीरज़िअल्लाहूअन्होरिवायतकरतेहैंकिरसूलसल्लल्ला हूअलैहिवसल्लमनेफ़रमाया: "

मैंनेइसशुभरात्रिकीखोजकरनेहेतुप्रथमचरणकाएतेकाफ़किया,

[30] **बुख़ारी:२०२६, एवंमुस्लिम:११७२**

फिरमैंनेबीचकेचरणएतेकाफ़किया,

फिरमेरेपासजिब्रीलकाआगमनहुआतोमुझसेकहागया:

वहअंतिम१०रात्रिमेंहैअबतुममेंसेजोएतेकाफ़करनाचाहेवहएतेकाफ़ करले."[31]

27-

रमज़ानकेव्रतकीएकविशेषतायहहैकिअल्लाहतालानेइसकेअंतमेंज़ कात-

उलफ़ित्रकेनिकालनेकाआदेशदियाहैजोव्रतकेबीचपाएगएपापोंएवंन कारात्मकबातोंसेउपवासकरनेवालेकोपवित्रकरतीहै,

इब्नेअब्बासरज़िअल्लाहूअन्हुमाबयानकरतेहैं:

"रसूलसल्लल्लाहोअलेहीवसल्लमनेफ़ित्रकेदान-

पुण्यकोउपवासकरनेवालोंकोपापएवंनकारात्मकबातोंसेपवित्रकरने एवंलाचारव्यक्तियों (मिसकीन) केखानेहेतुअनिवार्यकियाहै."[32]

28- रमज़ान की विशेषता यह भी है कि अल्लाह तआ़ला ने इसके पश्चात ईद के शईरा को अनिवार्य कर दिया है,दो महान

[31] मुस्लिम:११६७

[32] इसेअबूदाऊद:१६०९नेरिवायतकियाहै, एवंअल-सुननकेअनुसंधानमेंअरनाउतनेइसेहसनकहाहै.

शआइर को अदा करने के पश्चात अल्लाह तआला ने मुसलमानों के लिए दो ईदें अनिवार्य कर दी हैं,रमज़ान के रोज़े और अल्लाह के घर का ह़ज,ईदुल फितर रमज़ान के रोज़े पूरे होने के पश्चात मनाई जाती है,अत: जब मुसलमान रोज़े पूरे कर लेते हैं तो अल्लाह तआला उन्हें नरक से मुक्ति प्रदान फरमाता है,इस कृपा एवं दया के आभार के रूप में सदका-ए-फितर एवं ईद की नमाज़ अदा की जाती है,इस ईद में मुसलमानों का जुमा से भी अधिक बड़ा जनसमूहहोता है,उनकी महानता एवं महत्ता का प्रदर्शन होता है,इस शेआ़र पर उनका गर्व प्रकट होता है और उनकी प्रचुर्ता का ज्ञात होता है,इसी लिए इस दिल सारे लोगों के लिए ईदगाह जाना मुस्तह़ब है,यहां तक कि महिलाओं एवं बच्चों के लिए भी,बल्कि ह़ाइज़ा (माहवारी महिला) महिलाएं भी मुसलमानों की दुआ में भाग लेंगी किन्तु ईदगाह से हट कर रहेंगी,ईद में इस महीने की समाप्ति,ईद के आगमन और रह़मत की पूर्ति के अवसर पर प्रसन्नता का प्रदर्शन होता है।[33]

[33] **देखें:इब्ने रजब की "فتح الباری",ह़दीस की व्याख्या:45**

29- रमज़ान की एक विशेषता यह भी है कि इसके समापन पर तकबीर पुकारना अनिवार्य है,जिस का आरंभ ईद की रात के आगमन से होता है और ईद की नमाज़ की समापन तक चलती रहती है,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

﴿وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَى مَا هَدَاكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ﴾

अर्थात:तुम गिनती पूरी करलो और अल्लाह तआ़ला की दी हुई हिदायत पर उसकी प्रशंसा करो और उसका आभार व्यक्त करो।

अर्थात:रमज़ान के तीस दिनों की गिनती पूरी करो,उसकी समाप्ति पर अल्लाह की तकबीर बयान करो,और अल्लाह ने इस प्रार्थना को करने की जो तौफीक़ प्रदान की,इसे आसान बनाया,इसमें सहायता कि और इसके समापन तक पहुंचाया इस पर उसका शुक्र अदा करें।

इसी प्रकार से अल्लाह तआ़ला ने ह़ज की समाप्ति पर मुसलमानों के लिए ईदुलअज़हा को अनिवार्य कर दिया वह इस प्रकार से कि ह़ाजीणन अ़फ़ा के मैदान में ठहरते हैं,जो कि नरक से मुक्ति का दिन है,इस दिन से अधिक किसी भी दिन

न नरक से मुक्ति मिलती है और न पापों को क्षमा मिलती है,इस लिए अल्लाह ने इसके पश्चात ईद रखी जो कि सबसे बड़ी ईद है।

30- रमज़ान की एक विशेषता यह है कि जो व्यक्ति रमज़ान के रोज़े रखता है और उसके पश्चात शौव्वाल के छे रोज़े रखता है वह उस व्यिक्त के जैसा है जो पूरे वर्ष रोज़े रखता है,क्योंकि सदाचार का पुण्य दस गुना बढ़ा कर दिया जाता है,जबकि उप व्यक्ति ने केवल 36 दिनों के रोज़े रखे,अबू अय्यूब रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे,फिर उसके पश्चात शौव्वाल के छे रोज़े रखे तो यह (पूरा वर्ष) लगातार रोज़े रखने के जैसा है"।[34]

• यहरमज़ानकेमहीनेकी तीस विशेषताएंहैंमुसलमानोंकोचाहिएकिवेइनसेअवगतहों, एवंव्रतकेदौरानइन्हेंअपनीबुद्धिमेंसुरक्षितरखेंताकिईमानएवंलाभ कीआशाकेसाथव्रतपूराकरनेमेंयहविशेषताएंसहायकस्वरूपहों.

[34] सह़ी मुस्लिम:1164

रमज़ान में अधिक कुरान पढ़ने पर प्रोत्साहित करना

ए अल्लाह के बंदो!रमज़ान कुरान का महीना है,अल्लाह ने इस महीने में कुरान को बैतूलइज्ज़त से सांसारिक आकाष की ओर नाज़िल फरमाया,फिर घटनाओं के अनूसार नबी सल्ललाहु अलैहि वसल्लम पर धीरे धीरे उतारा,बल्कि अल्लाह तआला ने कुरान के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों को भी रमज़ानही में नाज़िल किया,वासिला बिन असका रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है, नबी सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःष्इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ग्रंथ रमज़ान की प्रथम रात को ,तौरात छठे रात को,इनजील रमज़ान के तेरह दिन गुजरने के पष्चात;अर्थात चौधवीं तारीखद्ध को और कुरान चौबीस दिन गुजरने के पष्चात ;अर्थात पचीसद्ध रमज़ान को नाज़िल हूआ।[35]

- ए मोमिनो!कुरान का सस्वर पाठ रमज़ान में की जाने वाली महत्वपूर्ण प्रार्थना है,क्योंकि रमज़ान ऐसा महीना है जिस में कुरान को अधिक पढ़ना मुस्तह़ब;वांछनीयद्धकार्य है,धार्मिक पूर्वजों का परंपरा एवं प्रथा था कि वे रमज़ान में कई बार कुरान खत्म किया करते थे,काई तीन रातों में कुरान समाप्त करलेता,तो कोई चार दिनों में खत्म करता और कोई चार से अधिक दिनों में कुरान खत्म करलेता।

- ए अल्लाह के बंदो!कुरान का सस्वर पाठ सबसे श्रेश्ठ प्रार्थना और अल्लाह की निकटता प्राप्ति का सबसे बड़ा माध्यम है,चाहे तहज्जुद एवं तरावीह़ में सस्वर पाठ की जाऐ अथवा नमाज़ के बाहर सस्वर पाठ की जाऐ,अब्दुल्लाह बिन **मसऊद** रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःजिसने अल्लाह की पुस्तक का एक षब्द पढ़ा उसे उसके बदले एक पुण्य मिलेगा,और एक पुण्य दस

[35] इसे अह़मद;4/107 ने रिवायत किया है और अल्बानी ने अलसह़ीहा 1575 में इसे ह़सन कहा है।

गुना बढ़ा दिया जाएगा,में यह नहीं कहता कि «الم»एक षब्द है,बल्कि «الف»एक षब्द है,«لام»एक षब्द है और«ميم»एक षब्द है[36]

• अबू मूसा अषअ़री रजीअल्लाहु अंहु ने उल्लेख किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःउस मोमिन का उदाहरण जो कुरान पढ़ता हो,संतरे जैसी है जिस का सुगंध भी मधुर है और स्वाद भी सुस्वादु है और उस मोमिन का उदाहरण जो कुरान नहीं पढ़ता,खजूर जैसा है जिस में कोई सुगंध नहीं होता किंतु स्वाद मधुर होता है और पाखण्डी का उदाहरण जो कुरान पढ़ता हो,रैहा़ना;पुश्पद्ध जैसा है जिसका सुगंध तो अच्छा होता है किंतु स्वाद कड़वा होता है और जो मुनाफिक;पाखण्डीद्धकुरान भी नहीं पढ़ता उसका उदाहरण अंदराइन जैसा है जिसका सुगंध नहीं होता और स्वाद भी कड़वा होता ह[37]

• अबू होरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःरषक;ईश्र्या द्वेशद्ध तो केवल दो ही व्यक्तिों पर होना चाहिएःएक उस व्यक्ति पर जिसे अल्लाह तआ़ला ने कुरान का ज्ञान दिया और वह रात.दिन उसकी सस्वर पाठ करता रहता है,उसका पड़ोसी सुन कर कह उठे कि काष मुझे भी इसके जैसा कुरान का ज्ञान होता और में भी इसके जैसा कार्य करता और वह दूसरा जिसे अल्लाह ने धन दिया और उसे सत्य के लिऐ लुटा रहा है।;उसको देख करद्धदूसरा व्यक्ति कह उठता है कि काष मेरे पास भी इसके जैसा धन होता और में भी उसके जैसा खर्च करता[38]

• आयषा रजीअल्लाहु अंहा वर्णन करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःउस व्यक्ति का उदाहरण जो कुरान पढ़ता है और वह उसका ह़ाफिज भी है,सम्मानित एवं लिखने वाले नेक देवदूतों जैसा

[36] इसे तिरमीजी ;2910 ने रिवायत किया है और अल्बानी ने सह़ी कहा है।
[37] इसे बोखारी;5427 और मुस्लिम;797 ने वर्णन किया है।
[38] इसे बोखारी;5026 ने वर्णित किया है।

है और जो व्यक्ति कुरान बारबार पढ़ता है।फिर भी वह उसके लिऐ कठिन है तो उसे दोगुना पुण्य मिलेगा[39]

• अबू होरैरा रजीअल्लाहु अंहु कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःष्क्या तुम में से कोई इस बात को पसंद करता है कि जब वे अपने घर लौट कर जाए तो उसे तीन बड़ी मोटी गर्भवती **ऊंटनियां** घर पर बंधी हुई मिलींष्हमने कहाःजी हां;क्यों नहींद्ध।आपने सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःष्तुम में से जब कोई व्यक्ति नमाज़ में तीन आयतें पढ़ता है,तो यह उसके लिए तीन बड़ी मोटी गर्भवती **ऊंटनियों** से श्रेश्ठतर है[40]

• उक़बा बिन आ़मिर रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर से निकल कर बाहर आऐ।हम सफा;चबूत**रे**[41] पर थे,आपने फरमायाःष्तुम में से कौन पसंद करता है कि रौजाना सुबह बत़्हान[42] अथवा अ़क़ीक़[43] ;की वादीद्धमें जाए और वहां से बेगैर किसी पाप एवं संबंध तौड़ने के दो बड़े बड़े कोहानों वाली **ऊंटनियां** लाए? ष्हमने कहाःए अल्लाह के रसूल!हम सब को यह बात पसंद है,आपने फरमायाःषफिर तुम में से सुबह कोइ व्यक्ति मस्जिद में क्यों नहीं जाता कि वह अल्लाह की पुस्तक की दो आयतें सीखे अथवा उनकी सस्वर पाठ करे तो यह उसके लिऐ दो **ऊंटनियों** की प्राप्ति से अच्छा है और यह तीन आयतें तीन **ऊंटनियों** से अच्छा है और चार आयतें उसके लिए

[39] इसे बोखारी ;4937 और मुस्लिम ;798 ने वर्णित किया है उपरोक्त षब्द बोखारी के हैं।
[40] मुस्लिम 208
[41] यह मस्जदि नबवी की वह सायादार स्थान है जिसमें दरिद्र सह़ाबा शरण लेते थे।देखें: अलनेहाया
[42] मदीना की वादी है
[43] मदीना की एक वादी है

चार **ऊंटनियों** से बेहतर हैं और;आयतों की संख्या जो भी हो द्ध **ऊंटनियों** की उतनी संख्या से बेहतर हैष्।[44]

- अबू अमामा बाहिली रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि में ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुनाःष्कुरान पढ़ा करो,क्योंकि वह क़यामत के दिन कुरान वालों;हिफज़ व पाठन व अमल करने वालोंद्धका सिफारषी बन कर आऐगा[45]

- मोमिन बंदा जब रोज़ा के साथ कुरान की तिलावत;सस्वर पाठद्धकरे तो वह इस का अधिक पात्र होता है कि क़यामत के दिन यह आमाल उसके प्रति अनुषंसा करें कि उसके स्थान उच्च कर दिऐ जाऐं और पाप मिटा दिऐ जाऐं।अब्दुल्लाह बिन अमर रजीअल्लाहु अंहु रिवायत करतें हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःष्रोज़ा और कुरान क़यामत के दिन बंदे के प्रति अनुषंसा करेंगे,रोज़ा कहेगाः;हे पालनहार!मेंने इसे खाने पीने और आतमा की इच्छाओं से रोके रखा,इस़के प्रति मरी अनुषंसा स्वीकार करले और कुरान कहेगाः;मेंने इसे रात को सोने से रोके रखा,इसके प्रति मेरी अनुषंसा स्वीकार करले इस प्रकार दोनों की अनुषंसा स्वीकार कर ली जाएगी।[46]

षीर्शकः

[44] मुस्लिम 803द्ध
[45] मुस्लिम 804
[46] इसे अहमद ;2/174 ने रिवायत किया है और अल्बानी ने सही अलतरग़ीब984 और ष्सही अलजामे7329 में उसे सही कहा है।

षबक़दर की दस विषेशताए

अल्लाह तआ़ला ने अपनी ह़िकमत;नीतिद्ध से कुछ समय को कुछ पर प्राथमिकता एवं प्रधानता प्रदान किया है,अतः जिलह़िज्ज के दस दिनों को वर्श के अन्य दिनों पर प्राथमिकता दी है,अ़रफा के दिन को वर्श के समस्त दिनों पर प्राथमिकता प्रदान किया है,रमज़ान को अन्य समस्त महीनों पर प्रधानता दी है और षबे क़दर को रमज़ान की समस्त रातों से श्रेश्ठतर बताया है, षबे क़दर की दस विषेशताएं हैं जो निम्नलिखित हैं:

• प्रथम विषेशताःयह वह रात है जिसको अल्लाह ने यह विषेशता प्रदान किया है कि उसमें कुरान के नाज़िल करना प्रारंभ किया,अल्लाह का कथन है:

(إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ)

अर्थातःनिसंदेह हमने इसे षबे क़दर में नाज़िल किया।

इसी रात में कुरान लौहे मह़फूज़ से बैतुलइज्ज़त में नाज़िल हुआ जो सांसारिक आकाष में है,फिर वहां से घटनाओं के अनुसार क्रमषः नाज़िल होता रहा।

• षबे क़दर को इस नाम से जानने का कारण यह है कि इस रात का बड़ा महत्व है,जैसा कि कहा जाता है;अमुक व्यक्ति का बड़ा महत्व हैद्ध,इस प्रकार महत्व को रात से संबंध करना,किसी वस्तु को उसके विषेशण की ओर संबंध करने की जाति से है।

• एक कथन यह है कि चूंकि इस रात में पूरे साल के मामले मोक़ददर;निष्चय द्ध किए जाते हैं,अर्थात वार्शिक तक़दीर निष्चय किए जाते हैं,जैसा कि अल्लाह का कथन है:

(فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ)

अर्थातःइसी रात में प्रत्येक मज़बुत कार्य का निर्णय किया जाता है।

इब्नुलकय्यिम कहते हैं किःयही कथन सत्य है।[47] [48]

अतः इस रात में निर्णय लिया जाता है कि आगामी वर्श में कोनसे कार्य होने हैं।अर्थात अल्लाह तआ़ला देवदूतों को पूरे वर्श की गतिविधियों से अवगत करता है,उन्हें विस्तारपूर्वक आगामी वर्श की षबे क़दर तक घटने वाले समस्त घटनाओं से संबंधित कर्तव्यों का आदेष देता है,उनके समक्ष मृत्यु,रिज़्क,फक़ीरो व अमीरी,हरयाली व अकाल,स्वास्थ्य एवं रोग,युद्ध एवं भूकंप और इस वर्श घटित होने वाले समस्त घटनाएं स्पश्ट कर दिए जाते हैं।[49]

इब्ने अब्बास रजीअल्लाहु अंहुमा फरमाते हैंःषबे क़दर में लौहे महफूज़ से,आने वाले वर्श के मध्य घटने वाली मृत्यु एवं जीवन,रिज़्क एवं वर्शा उल्लेख किया जाती हैं,यहां तक कि हाजियों के विशय में भी लिख लिया जाता है कि अमुक अमुक व्यक्ति ह़ज करेंगे[50]

• षबे क़दर की द्वितीय विषेशता यह है किःइस में देवदूत पृथ्वी पर नाज़िल होते हैं,अल्लाह का कथन हैः

(تَنَزَّلُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ فِيهَا)

अर्थातःइसमें देवदूत और रूह;जिबरईलद्ध उतरते हैं।

रूह़ का अर्थ जिबरईल है,इब्ने कसीर रहीमहुल्लाह इस आयत की व्याख्या में लिखते हैंःअर्थात यह रात जोकि बड़ी बरकतों वाली होती है,इस लिए अधिक संख्या में देवदूत नाजिल होते हैं,बरकत एवं रह़मत के साथ देवदूत भी नाजिल होते हैं,जिस प्रकार कुरान के सस्वर पाठ के समय देवदूत नाजिल होते हैं,षैक्षिक सभा को घेर लेते हैं और सत्य नियत के

---

[47] षफाउल अ़लीलः1/110,प्रकाषकःअलअबीकान पुस्तकालय.रियाज

[48] इन दोनों कथनों के लिए देखेंःअह़दीसल सियामः140,षख अब्दुल्लाह अलफौज़ान की

[49] अल्लाह तआ़ला के कथन(فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ)का व्याख्या देखेंःषंक़ीती रहिमहुल्लाह की तफसीरःअज़वाउल बयान में सूरह अलदोखन में।

[50] इस कथन को इब्ने जरीर आदी ने इब्ने अब्बास रजीअल्लाहु अंहुमा से निम्नलिखित आयत की व्याख्या में उल्लेख किया है,उपरोक्त षब्द इब्ने जरीर से वर्णित हैं।

साथ ज्ञान प्राप्ति में व्यस्थ रहने वाले छात्रों के सम्मान में अपने पंख बिछा देते हैं।समाप्त

• षबे क़दर की तृतीय विषेशताःअल्लाह तआ़ला ने इस रात को सौभाग्यषाली बताया है,अल्लाह तआ़ला कुरान के नाज़िल होने के प्रति फरमाता हैः

(إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةٍ مُبَارَكَةٍ)

अर्थातःनिसंदेह हमने इसे सौभाग्यषाली रात में उतारा है।

• षबे क़दर की चौथी विषेशताःअल्लाह तआ़ला ने इसे षांति की रात कहा है यहां तक कि फजर हो जाए,अर्थात प्रत्येक प्रकार की बुराइयों व फितनों से सलामति;सुरक्षाद्धकी रात,क्योंकि इस में कलयाण एवं अच्छाई अधिक से अधिक होती है,यहां तक कि फजर निकल आए।

• षबे क़दर की पांचवी विषेशताःजो व्यक्ति इस रात को क़याम करे अर्थात इसे नमाज़ से आबाद करे,.;ईमान के साथद्ध अर्थात अल्लाह तआ़ला इस महान रात में क़याम करने वालों के लिए जो बदला व पुण्य तैयार कर रखा है,उस पर ईमान रखते हूए,.;एहतेसाब के साथद्ध अर्थातःबदला व पुण्य की आषा करते हुए,उसके पूर्व के समस्त पाप माफ हो जाते हैं,अबू होररा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःष्जो लैलतुल क़दर में ईमान व एह़तेसाब के साथ नमाज़ में खड़ा रहे उस के पुर्व के समस्त पापों को क्षमा प्रदान किया जाता है[51]

• षबे क़दर की छटी विषेशताःइस रात को नमाज़ से आबाद करना हज़ार रातों की प्रार्थना से बेहतर है,अर्थात तेरासी;83द्धवर्शों से भी अधिक,अल्लाह का कथन हैः

(لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ)

[51] इसे बोखारी;1901द्धऔर मुस्लिम;759द्धने रिवायत किया है।

अर्थातःषबे क़दर एक हज़ार महीनों से बेहतर है।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःष्रमज़ान का षुभ महीना तुम्हारे पास आ चुका है,अल्लाह तआ़ाला ने तुम पर इसके रोज़े फरज़ कर दिए हैं,इस में आकाष के दरवाजे खोल दिए जाते हैं,नरक के दरवाजे बंद कर दिए जाते हैं,और सरकष षैतानों को जंजीरें लगा दी जाती हैं,और इस में अल्लाह तआ़ाला के लिए एक रात ऐसी है जो हज़ार महोनों से बेहतर है,जो इस के अच्छाई से वंचित रहा तो वह बस वंचित ही रहा[52]

इब्ने सादी रहिमहुल्लाह फरमाते हैंःयह ऐसा;पुरस्कारद्ध है जिस के सामने बुद्धि आष्चर्यचकित और चेतना परीषान होजाता है कि अल्लाह तआ़ाला ने इस उम्मत को एक ऐसी रात प्रदान किया है जिस रात की प्रार्थना हज़ार रातों की प्रार्थना के समान है,जो कि एक लंबी आयू वाले मनुश्य के जीवन के बराबर है,अस्सी;80द्धवर्श से भी अधिक।[53]संक्षेप एवं हलके हैरफैर के साथ समाप्त हुआ।

• षबे क़दर की सातवीं विषेशताः पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान के अंतिम दस दिनों मं षबे क़दर की खोज में जितना परिश्रम करते थे उतना परिश्रम अन्य दिनों में नहीं करते थे,आयषा रजीअल्लाहु अंहा रिवायत करती हैं कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अंतिम अ़षरे;अंतिम दस दिनोंद्धमें प्रार्थना में इतना परिश्रम करते थे जितना अन्य दिनों में नहीं करते थे।[54]

आयषा रजीअल्लाहु अंहा से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की याह आदत थी कि जब रमज़ान का अंतिम अ़षरा आता तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात भर जागते और घर वालों को भी

[52] इसे निसाई;2106ने अबू होरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है और अल्बानी रहिमहुल्लाह ने इसे सही कहा है

[53] **लगभग तेरासी (83) वर्ष**

[54] मुस्लिम ;**1175**

जगाते, ;प्रार्थना मेंद्धकठोर परिश्रम करते और कमर कस लेते और हिम्मत बांध लेते थे।[55]

;कमर कस लेते और हिम्मत बांध लेते इस का अर्थ यह है कि प्रार्थना के लिए तैयार रहते,उसमें परिश्रम एवं लगन से काम लेते,और आदत के कहीं अधिक प्रार्थना करते थे,एक कथन यह भी है कि पत्नियों से अलग रहते और संभोग से दूर रहते।

• षबे क़दर की आठवीं विषेशताः पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम षबे क़दर की खोज में रमज़ान के अंतिम अ़षरे में मस्जिद के अंदर एतेकाफ किया करते थे,आयषा रजीअल्लाहु अंहा फरमाती हैंः पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने मृत्यु तक बराबर रमज़ान के अंतिम अ़षरे में एतेकाफ करते रहे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पष्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियां एतेकाफ करती रहीं।[56]

अबू सईद खुदरी रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःमेंने षबे क़दर को खोजने के लिए प्रथम अ़षरे का एतेकाफ किया,फिर मेंने मध्य अ़षरे का एतेकाफ किया,फिर मेरे पास;जिबरईल आए द्ध तो मुझसे कहा गयाःवह अंतिम दस रातों में है तो अब तुम में से जो एतेकाफ करना चाहे वह एतेकाफ करले।[57]

• ए अल्लाह के बंदो! पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इतना परिश्रम एवं लगन से प्रार्थना करना इस बात का प्रमाण है कि आप महत्वपूर्ण समयों में अल्लाह की अधिक से अधिक आज्ञाकारी किया करते थे,इस लिए मुसलमानों को भी पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुगमन करना चाहिए कि आप ही आदर्ष हैं,हम मुसलमानों को अति परिश्रम के साथ अल्लाह की पूजा करनी चाहिए और रात व दिन के समय को नश्ट नहीं करना चाहिए,क्योंकि मनुश्य नहीं जानता कि कब स्वादों को तोड़ने और लोगों से जुदा करदेने वाली मौत उसे आ

[55] बोखारी;2034,मुस्लिम;1174 और निम्नलिखत षब्द मुस्लिम से वर्णित हैं।
[56] इसे बोखारी;2026 और मुस्लिम;1172 ने रिवायत किया है।
[57] मुस्लिम ;1167

पकड़े,फिर उस समय उसे अफसोस हो जब अफसोस का कोई लाभ नहीं होगा।[58]

• षबे क़दर की नौवीं विषेशताःइस रात में विषेश रूप से अल्लाह से क्षमा प्राप्त करने पर प्रोत्साहन आया है,आयषा रजीअल्लाहु अंहा ने पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछाःए अल्लाह के नबी!यदी में षबे क़दर पालूं तो क्या दुआ मागूं?आपने फरमायाःयह कहनाः

(اللهمإنكعفوتحبالعفوفاعفعني)

अर्थातःहे अल्लाह!तू अधिक क्षमा प्रदान करने वाला है,तू क्षमा को पसंद करता है,अतःमुझे क्षमा प्रदान कर दे।

• षबे क़दर की दसवीं विषेशताःअल्लाह तआ़ाला ने इस के महत्व में एक सूरह नाज़िल फरमाई जो क़यामत तक सस्वर पाठ की जाती रहेगी,इसके माध्यम से इस की महानता को स्पश्ट किया,इसकी महानता का कारण यह बताया कि इस रात कुरान नाज़िल किया गया,एवं यह भी उल्लेख किया कि इस रात देवदूत पृथ्वी पर उतरते हैं,एवं जो इस रात को नमाज़ एवं प्रार्थना में गुजारता है उसका क्या पुण्य है,इस रात के आरंभ और अंत को स्पश्ट किया,समस्त प्रषंसाऐं उस अल्लाह के लिए हैं जिसने बंदों पर कृपा करते हूए उन्हें पुण्य के वसंत का मौसम प्रदान किया।

• हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि उसी प्रकार रमज़ान के रोज़े रखने की तौफीक़ प्रदान करे जिस प्रकार उसे पसंद है,और अपने ज़िक्र व धन्यवाद और सुंदर प्रार्थना पर हमारी सहायता फरमाए।

• अल्लाह तआ़ाला ने षबे क़दर को अपनी नीति से गुप्त रखा है,वह ह़िकमत यह है कि मोमिन बंदा उसकी खोज में पूरी दस रातें प्रार्थना करे,ताकि बड़े पुण्य को प्राप्त कर सके,इसके विपरीत यदि मालूम होता कि षबे क़दर कोंसी तिथि को होती है तो वह केवल उसी रात में प्रार्थना करता।

[58] षैख मोह़म्मद बिन सालेह़ अलमुनजिद के लेख से हलके हैरफैर के साथ लिया गया है,मेंने यह कथन उनके वैबसाइट से लिया है।

• यदि षबे क़दर के बारे में मालूम होता कि वह कोंसी रात है तो पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके खोज में पूरी दस रातें एतेकाफ न करते और न अपनी उम्मत को यह निर्देष देते कि उसकी खोज में दस रात एतेकाफ करें,बल्कि केवल षबे क़दर में ही आप एतेकाफ करते,जबकि वास्तव यह है कि आप ने संपूर्न दस रातों में उसको खोजने का आदेष दिया है,विषेश रूप से ताक़;विशमद्ध रातों में,जो इस बात का प्रमाण है कि ताक़ रात में षबे क़दर होने का अधिक संभावना होता है,आयषा रजीअल्लाहु अंहा से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाह, अलैहि वसल्लम ने फरमायाःष्षबे क़दर को रमज़ान के अंतिम अ़षरे की ताक;विशमद्ध रातों में खोजो[59]

ज्ञात हूआ कि इस्लामी पाठ इस बात के साक्ष हैं कि षबे क़दर प्रत्येक वर्श अलग अलग रातों में हुआ करती है,किंतु इन दस रातों के अंदर ही सीमित रहती है।

इस लिए मोमिन को चाहिए कि अंतिम अ़षरे की समस्त रातों के अंदर प्रार्थना में वयस्ता रहे,लोग सोषल नेटवर्क पर जो प्रसारित करते फिरते हैं कि षबे क़दर अमुक रात को होती है,इससे सतर्क रहें,यह ऐसी बात है जो समय की बरबादी और अ़मल से दूरी की ओर लेजाती है।

• ए अल्लाह के बंदो!मोमिन को चाहिए कि अंतिम अ़षरे में अन्य दिनों के तुलना में अधिक परिश्रम एवं लगन से प्रर्थाना करे,इसके दो कारण हैं,एक यह किःइस अ़षरे का अधिक महत्व है और इसी में षबे क़दर भी होती है,दूसरा यह किःयह महीना उससे विदा हो रहा है और वह नहीं जानता कि आगामी वर्श उसे यह महीना नसीब होगा अथवा नहीं।[60]

[59]बोखारी 2017

[60] [60]यह कथन इब्न अलजौज़ी का है जो उन्होंने अपनी पुस्तक अलतबसेरहमें उल्लेख किया है,हैरफैर के साथ वर्णित।

शीर्षक:

ईदुलफ़ित्र से संबंधित दस महत्वपूर्ण बिन्दुऐं

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

प्रषंसाओं के पष्चात:

सर्वश्रेश्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है।दुश्टतम चीज़ धर्म में अविश्कारित बिदअ़त;नवाचारद्धहै और प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

1ण ए अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से पूरे तौर से डरो और उसका तक़्वा अपनाओ,इस्लाम को बलपूर्वक थाम लो,और अल्लाह तआ़ला की प्रषंसा करो कि उसने रमज़ान महीने के अंत तक तुमको पहुंचाया,तुम्हारे रब का कथन है:

(وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ)

अर्थात:वह चाहता है कि तुम गिनती पूरी करलो और अल्लाह तआ़ला की दी हुई मार्गदर्षन पर उसकी प्रषंसा करो और उसका आभारी रहो।

2ण ए मुसलमानो!निसंदेह अल्लाह तआ़ला ने सत्य फरमाया कि रमज़ान केवल:;गिनती के कुछ दिन हैंद्ध,यह दिन कितनी जलदी गुजर जाते हैं,यह दिन.रात गुज़र गए और हमसे जुदा हो गए,आपको महसूस हुआ कि कैसे यह दिन गुजर गए?क्या आपको एहसास हुआ कि कितनी जलदी यह दिन.रात बीत गए?

3ण ए मोमिनो!आपको बधाई हो कि आपने इस महीने के रोज़े रखे,आपको बधाई हो कि आपने इस महीने की रातों में क़्याम किया,आपको बधाई हो कि आप इस महीने के अंत तक को पहूंच गए,जबकि बहुत से लोगों का निधन हो गया और उन्हें रमज़ान का यह

अंतिम क्षण नसीब न होसका,हममे से प्रत्येक पर अल्लाह के अनेक आषीर्वाद हैं।

4ण ए मुसलमानो!आप सब को वह खुषी बधाई हो जो हमें इस्लाम के इस महान स्तंभ को पूरा करने के पष्चात रमज़ान महीने के अंत में प्राप्त होती है,हम अल्लाह की प्रषंसा करते हैं,उसके एकता और उसकी महानता की गीत गाते हैं,यदि अल्लाह ने चाहा तो हमारे पुण्यों में वृद्धि हुआ होगा,हमारे पापों को क्षमा मिला होगा और हमारे स्थान उच्च ह्ए होंगे।

5ण ए अल्लाह के बंदो!आपको वह खुषी बधाई हो जो हमें दो महान अवसरों के पष्चात ईद के रूप में प्राप्त होती है,जिसमें हमारे पाप मिटाए जाते हैं,पुण्यों में वृद्धि होता है,हमारे स्थान उच्च होजाते हैं,रोज़े पूरे करने के पष्चात हम ईदुलफ़ित्र मनाते हैं और ह्ज पूरा करने के पष्चात ईदुलअज़हा मनाते हैं,हमारी ईदें दीन व प्रार्थना,नमाज़ व तकबीर, ;प्राण की बलिद्ध और ज़काते फितर से निर्मित हैं,यह खुषी भी है और परिजनों के साथ सुंदर व्यवहार भी,आपसी मोलाकात,आपसी प्रेम,पूर्व के पापों को क्षमा और नए संबंध बनाने,छल.कपट और कीना को भूल जाने का उत्तम अवसर है,जिस व्यक्ति को किसी परिजन अथवा मित्र से छल.कपट हो अथवा संबंध टूट गया हो तो उस दिन को गनीमत जान कर संबंध को जोड़े और नए से संबंध बनाए और दिलों में खूषयों के रंग भरे,नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह्दीस है:;अल्लाह के निकट सबसे प्रिय कार्य यह है कि किसी मुसलमान को खुषी पहूंचाई जाए द्ध;सही अलतरगीब:955द्ध

6ण ए मोमिनो!आपको हमारी ईद की यह ;पवित्र द्धखुषी की बधई हो जो बहुदेववादी और गुमराह समुदायों की ईदों में नहीं पाई जाती,बल्कि उनकी ईदें उनके पाप और अल्लाह से दूरी में वृद्धि कर देती हैं।

अल्लाह के बंदो!इन रह्मतों से प्रसन्न होजाऐं,अल्लाह का कथन है:

(قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَلِكَ فَلْيَفْرَحُوا)

अर्थातःआप कह दीजिए कि बस लोगों को अल्लाह के इस आषीर्वाद और रह़मत से प्रसन्न होना चाहिए।

अल्लाह से और;रह़मत व बरकतद्धआषीर्वाद की दुआ करें,समस्त प्रषंसाऐं अल्लाह के लिए हैं कि उसने हमारे उपर यह कृपा किया कि हमें इस्लाम और सुन्नत का निर्देष एवं मार्गदर्षन प्रदान किया।

7ण्ए मुसलमानो! ;ईद के दिनद्धसिंगार करें खुषबू लगाऐं,इमाम मालिक रहिमहुल्लाह फरमाते हैं:;मेंने विद्वानों से सुना कि वह अ़तर और सिंगार को हर ईद में मुस्तह़ब समझते थ[61]

8.ए मोमिनो!अपने घरों को और अपने दिलों को खोल कर रखें,एक दुसरे के लिए दुआ करें कि अल्लाह सब के अ़मल को स्वीकार करे,एक दुसरे को भदाई दें,सह़ाबा एक दुसरे को बधई देते हुए कहा करते थेः

تقبل اللہ منا و منکم

अल्लाह तआ़ला हमारे और आपके पुण्यों को स्वीकार फरमाए।द्ध

9.ए मुसलमानो!पूर्व के कमयों को क्षमा करना एक अति महत्वपूर्ण प्रार्थना एवं आज्ञाकारी है,अल्लाह तआ़ला ने उस पर अनेक बदला व पुण्य रखा है,अल्लाह का कथन हैः

(فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ)

अर्थातःजो क्षमा करदे और सुधार करले उसका बदला अल्लाह के जिम्मे है।

अतः अल्लाह ने ;इस कार्य परद्धअनेक बदला व पुण्य का वादा किया है,जिससे पता चलता ह कि यह अ़मल बड़ा महान है।

ए मोमिनो!आत्मा;दिलोंद्ध की सुधार और उनका षुद्धिकरण एक श्रेश्ठतर प्रार्थना है,उस पर अल्लाह ने सफलता रखी है,अल्लाह का कथन हैः

(قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكَّاهَا وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسَّاهَا)

अर्थातःजिसने उसे पवित्र किया वह सफल हुआ और जिसने उसे भूमी में मिला दिया वह विफल हुआ।

[61] इब्ने रजब की पुस्तक षरहुलबोखारी;6/68,प्रकाषकःइब्नुलजौजी़.अलदमाम।

अल्लाह के बंदो!जिन कार्यों से प्रसन्न्ता में वृद्धि होता है,उनमें यह भी है कि समाजी संबंध अच्छे बनाए जाऐं,उनका नवीनीकरण किया जाए,उनमें षक्ति लाई जाए,पूरे वर्श के मध्य दिलों में छल कपट और नफरत के जो धूल जम गए हैं,उनसे दिलों को पवित्र किया जाए,बधाई है उस व्यक्ति के लिए जो ईद को गनीमत जान कर बिखरे हुए पति पत्नी के संबंध को बनादे,आपस में दूर दिलों को जोड़दे,जिसके कारण से उनके परिवार में खूषी पैदा हो जाए,अथवा कोई रक्त क्षमा करदे,अथवा परिजनों की आपसी रंजिष को दूर करदे।

ए अल्लाह **समस्त प्रशंसाएं तेरे ही योग्य हैं** तूने हमारे उपर रमज़ान के महीने का अंत और ईद को पहूंचाने का जो उपकार किया है,उसे हमारे लिए बरकत वाला बना दे और अपनी आज्ञाकारी के लिए इसे सहायक बनादे,ए अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान कर जो तुछसे निकट करदे,में अपनी यह बात कहते हूए अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह बड़ा क्षमा करने वाला और अति कृपा करने वाला है।

द्वितीय उपदेषः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد:

10.ए अल्लाह के बंदो!आप जान लें.अल्लाह आप पर कृपा करे.कि सबसे बड़ी खूषी उस समय प्राप्त होगी जब आप अल्लाह तआ़ाला से पुण्य के कार्यों के साथ मोलाक़ात करेंगे,अल्लाह तआ़ाला स्वर्ग वालों से फरमाएगाः ए स्वर्ग वासियो!स्वर्ग वासी उत्तर देंगेः हम उपस्थित हैं ए हमारे परवरदिगार!तेरी षुभकामनाऐं प्राप्त करने के लिए।अल्लाह तआ़ाला पूछेगाः क्या अब तुमलोग खुष हुए?वे कहेंगेः अब भी भला हम खुष न होंगे जबकि तूने हमें वह सब कुछ दे दिया जो अपनी मख़लूक़ में से किसी को नहीं दिया।अल्लाह तआ़ाला फरमाएगाः में तुम्हें उससे भी अच्छा बदला दूंगा।स्वर्ग वासी कहेंगेः ए रब!इससे अच्छा और क्या चीज होगी?अल्लाह तआ़ाला फरमाएगा किः अब में तुम्हारे लिए अपनी प्रसन्नता को सवेद रहने वाला कर दूंगा अर्थात उसके पष्चात कभी तुम पर नाराज नहीं हूंगा।[62]

11.ए मोमिनो!रमज़ान सुधार का और सवेद के लिए अल्लाह तआ़ाला से संबंध बनाने का उत्तम अवसर है,इस लिए आप प्रार्थना में लगे रहैं,रमज़ान के साथ प्रार्थना समाप्त नहीं होता,बल्कि मृत्यु के पष्चात अ़मल का दरवाजा बंद होता हैः

(وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّى يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ)

अर्थातः अपने रब की पूजा करते रहैं यहां तक कि आपको मृत्यु आजाए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन हैः;अल्लाह के दरबार में सबसे अधिक पसंद वह कार्य है जिसे पाबंदी से सवेद किया जाए,चाहे वह कम ही हो[63]

ए मुसलमानो!रमज़ान के पष्चात भी पुण्य के कार्य पर स्थिर रहना अल्लाह की तौफीक़ और अ़मल के स्वीकार होने की पहचान है,इसके

[62] बोखारी ;6549 और मुस्लिम;2829 ने इसे अबू सइद खुदरी रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।
[63] बोखारी ;5861द्ध ने आयषा रजीअल्लाहु अंहा से वर्णित किया है।

विपरीत केवल मौसम ही मौसम अ़मल करना कम ज्ञान,अल्लाह की तौफीक़ से दूरी का प्रमाण है,क्योंकि जो रमज़ान का रब है वही समस्त महीनों का रब है,किसी सलफ से उस व्यक्ति के बारे में पूछा गया जो व्यक्ति रमज़ान में खूब पार्थना करता है और उसके अतिरिक्त महीनों में प्रार्थना छोड़ देता है,तो उन्हों ने उत्तर दियाःयह बहुत ही बुरी कोम है जो केवल रमज़ान में अल्लाह को जानती है।

ए मोमिनो!मुसलमानों का एक श्रेश्ठ गुन यह है कि वे आज्ञाकारी करते हैं,आज्ञाकारी यह है कि प्रार्थना पर स्थिर रहा जाए और उसको सवेद किया जाए,अल्लाह ने आज्ञाकारी करने वालों की प्रषंसा करते हुए फरमायाः

(إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَانِتِينَ وَالْقَانِتَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ وَالْخَاشِعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّائِمِينَ وَالصَّائِمَاتِ وَالْحَافِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا)

अर्थातः;जो लोग अल्लाह के आगे आज्ञाकारी के साथ अपने सर को झुकाने वाले हैंद्धमुसलमान पुरूश और मुसलमान महिलाऐं और मोमिन पुरूश और मोमिन महिलाऐं और आज्ञाकारी पुरूश और आज्ञाकारी महिलाऐं और सत्य बोलने वाले पुरूश और सत्य बोलने वाली महिलाऐं और सबर करने वाले पुरूश और सबर करने वाली महिलाऐं डरने वाले पुरूश और डरने वाली महिलाऐं और दान करने वाले पुरूश और दान करने वाली महिलाऐं और रोज़े रखने वाले पुरूश और रोज़े रखने वाली महिलाऐं और अपनी षरमगाहों की सुरक्षा करने वाले पुरूश और षरमगाहों की सुरक्षा करने वाली महिलाऐं और अल्लाह को अधिक से अधिक याद करने वाले पुरूश और अधिक से अधिक याद करने वाली महिलाऐं.कुछ संदेह नहीं कि उसके लिए अल्लाह ने क्षमा और विषाल बदला तैयार कर रखा है।

12.ए अल्लाह के बंदो!रमज़ान क पष्चात षौवाल के छे रोज़े रखना सुन्नत और मुस्तह़ब है और अल्लाह तआ़ला ने इस पर बड़े बदले का वादा कर रखा है,जैसा कि अबू अय्यूब रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है

कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःजिसने रमज़ान के रोज़े रखे,फिर उसके पष्चात छे रोज़े रखे तो यह;पूरे वर्शद्धलगातार रोज़े रखने के जैसा है।[64]

षौवाल के छे रोज़े की एक बड़ी हि़कमत ;नीतिद्ध यह है कि रमज़ान के फरज़ रोज़ों में जो कमी रह जाती है,इन नफली रोज़ों से इसकी भरपाई हो जाती है,क्योंकि रोज़े़दार से कोई न कोई कोताही अथवा पाप हो जाता है जो फरज़ को प्रभावित करदेता है,अतःनफली रोज़े से फरज़ रोज़े की यह कमी दूर हो जाती है।

ईद से संबंधित यह दस;से अधिकद्ध बिन्दु हैं,मुस्लिम बंदा को चाहिए कि ईदुलफि़त़र के अवसर पर इन्हैं जेहन में रखे,ताकि ईद प्रार्थना में बदल जाए,केवल रीति रिवाज न रहे।

हे अल्लाह!हमारे पापों को और हमसे हमारे कामों में जो बेकार की जेयादती हुई है,उसे भी क्षमा करदे,हे अल्लाह!हमें नरक से मुक्ति प्रदान कर,हे अल्लाह!स्वर्ग को हमारा ठेकाना बनादे,हमें फिरदौसे बरीं का निवासी बना,हमें बिना हिसाब और बेगैर किसी यातना के स्वर्ग में प्रवेष प्रदान फरमा,ए करीम व दाता प्रवर्दिगार!हे अल्लाह!हमें नरक से मुक्ति प्रदान कर,हमें हमारे पापों से इस प्रकार पवित्र करदे जिस प्रकार हमारी माताओं ने हमें जना था,हे अल्लाह!हमारे इस सभा को पापों से क्षमा,अ़मल की स्वीकृति और परिश्रम की स्वीकृति व धन्यवाद के साथ समाप्ति फरमा,हे अल्लाह हमारे देष को और मुसलमानों के समस्त देषों को षांति,सोकून और खुषहाली व हरयाली का स्थान बनादे,हे अल्लाह!हमारी ईद को खुषी का स्त्रोत,हमारे जीवन को खुषहाल करदे,हमें स्वास्थ्य और षांति के साथ बारबार आज्ञाकारी व बरकत का मोसम प्रदान कर।

اللهم صل على محمد وعلى آل محمد، سبحانك ربنا رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين، الحمد لله رب العالمين

[64] मुस्लिम **1164**

लेखकः

शैख़ माजिद बिन सुलैमान अर्रसी

१षौवाल **१४४२** ह़िजरी

जूबैल,**सऊदी** अ़रब

००९६६५०५९०६७६१

अनुवादः
फैजुर रह़मान ह़िफजुर रह़मान तैमी
binhifzurrahman@gmail.com